Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

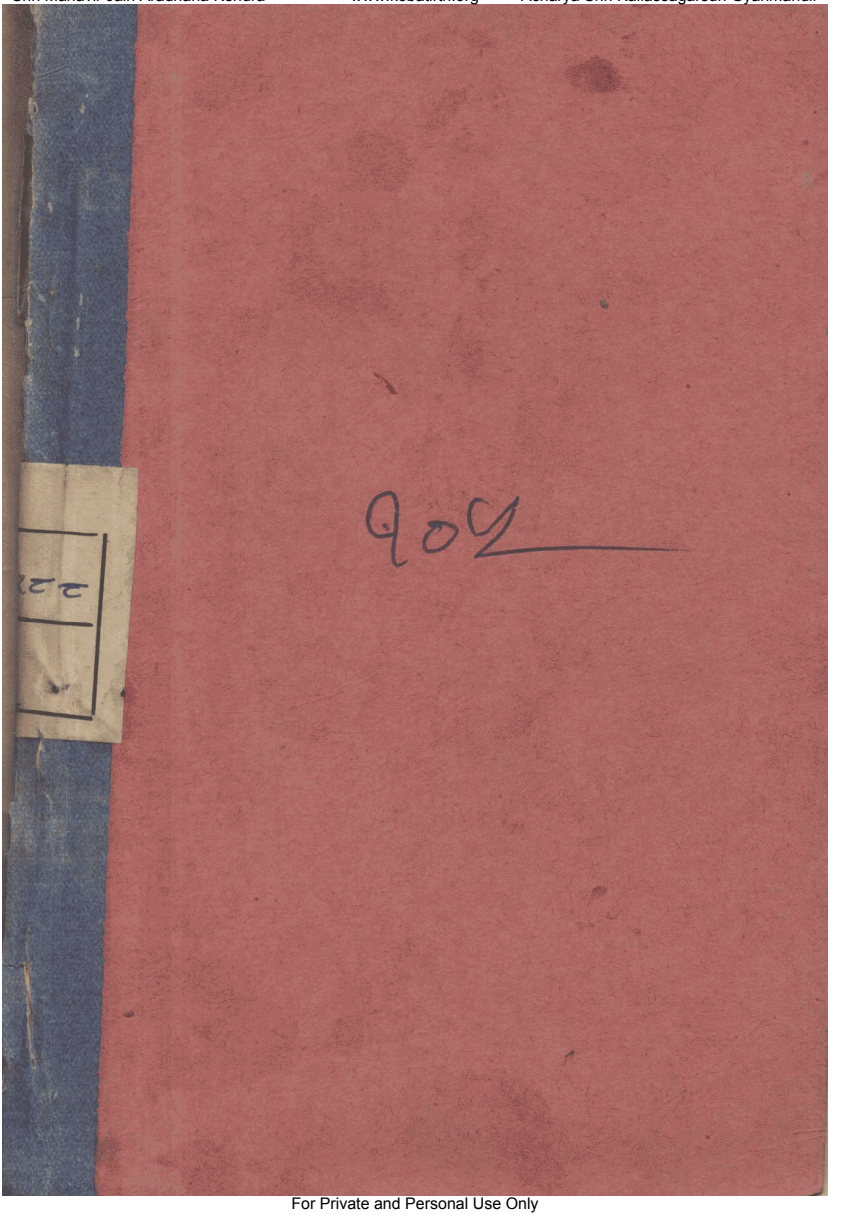


For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

# यवनराजवंशावली

अर्थात्

## लाहौर, दिल्ली, दक्षिण, गुजरात, मालवा और बंगाल देशों के मुसलमान बादशाहों की साल संवत् सहित वंशावली

आ.श्री. कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

लेखक
मुन्शी देवीप्रसाद कायस्थ, मुनसिफ़, जोधपुर

प्रकाशक
इंडियन प्रेस, प्रयाग
इंडियन पब्लिशिंग हौस, कलकत्ता

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

## नम्र सूचन

इस ग्रन्थ के अभ्यास का कार्य
पूर्ण होते ही नियत समयावधि में
शीघ्र वापस करने की कृपा करें.
जिससे अन्य वाचकगण इसका
उपयोग कर सकें.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

# यवनराजवंशावली

अर्थात्

लाहौर, दिल्ली, दक्षिण, गुजरात, मालवा
और बंगाल देशों के मुसलमान
बादशाहों की साल संवत्
सहित वंशावली

लेखक

मुन्शी देवीप्रसाद कायस्थ, मुनसिफ़, जोधपुर

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, प्रयाग

इंडियन पब्लिशिंग हौस, कलकत्ता

१९०९

प्रथमवार १००० ] सर्वाधिकार रक्षित

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Printed and Published by Panchkory Mittra at the
Indian Press, Allahabad.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

# भूमिका

आज कल हिन्दुओं में इतिहास की रुचि हो चलने से वे अपने देश और जाति के ही नहीं वरन् विदेशियों और विजातियों के इतिहास की तरफ़ भी ध्यान देने लगे हैं। पहले तो पौराणिक कथाओं के प्रभाव से रामचरित्र, कृष्णलीला और पांडवों के यश के सिवाय और कुछ सुनना ही नहीं चाहते थे, जिससे भारत के असंख्य राजाओं और शूरवीरों के यथार्थ इतिहास, जिन्होंने अपने देश और धर्म, गो-ब्राह्मण और स्त्रियों की रक्षा के वास्ते प्राण दिये थे, भूल के समुद्र में पड़ कर डूब गये। परन्तु अब अंगरेज़ी पाठशालाओं में, दूसरी विद्याओं के साथ साथ, इतिहासों के पढ़ाये जाने और अंगरेज़ विद्वानों के इतिहासों की खोज करने से हिन्दुओं को भी अपने खोये हुए इतिहासों के ढूँढ़ने और पूछताछ करके पुस्तकों में लिखने की उमंग हुई है और अपने पुराने इतिहास के प्रसंग में मुसलमानों के इतिहास को भी जानना चाहते हैं, जो वास्तव में बहुत हैं और ठीक भी हैं। परन्तु जो इतिहास-प्रेमी हिन्दू, उर्दू, फ़ारसी पढ़े हैं वे तो मुसलमानों के उर्दू-फ़ारसी भाषाओं में लिखे हुए असल इतिहासों से और जो अंगरेज़ी पढ़े हैं वे उनके अंगरेज़ी तर्जुमों से अपना काम निकाल लेते हैं और जो अंगरेज़ी नहीं पढ़े हैं उनको मुश्किल पड़ती है। क्योंकि अंगरेज़ी भाषा के समान हिन्दी भाषा में मुसलमानों के एक भी इतिहास का पूरा तर्जुमा अब तक नहीं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



हुआ है। इसी अभाव से यथावश्यकता बहुधा सज्जन पत्र द्वारा मुझ से मुसलमान बादशाहों के नाम, पते और दूसरे वृत्तान्त पूछा करते हैं। इस वास्ते मैंने उनके तथा सर्वसाधारण के हितार्थ यह छोटा सा ग्रंथ रचा है जिसमें सब मुसलमान बादशाहों की वंशावलियाँ, साल, संवत् और ज़रूरी घटनाओं सहित आ गई हैं और प्रत्येक बादशाही के घराने के प्रारंभ और समाप्ति के कारण भी बता दिये हैं। अब रही यह बात कि प्रत्येक बादशाह ने क्या क्या काम किया और हिन्दुओं के साथ उसका कैसा कैसा बर्ताव रहा सो यथावकाश दूसरे ग्रंथ में दिखाया जावेगा। अभी तो पाठक इस छोटे ग्रन्थ से कुछ संक्षिप्त रूप में मुसलमान बादशाहों का इतिहास जान लें और अपने ध्यान में रक्खें।

यह ग्रंथ विशेष करके तवारीख़ फ़रिश्ता के आधार पर बनाया गया है, जो एक बड़ा संग्रह भारत के मुसलमान बादशाहों के इतिहास का है और जिसको सन् १०१५ हिजरी-संवत् १६६३-में मोहम्मद क़ासिम फ़रिश्ता नाम एक मुंशी ने दक्षिण बीजापुर के बादशाह इब्राहीम आदिलशाह के हुक्म से बहुत सी तवारीख़ों का सार लेकर बनाया था। अंगरेज़ लोग भी इसी के प्रमाण से मुसलमान बादशाहों के वृत्तान्त अपनी पुस्तकों में लिखा करते हैं। क्या ही अच्छी बात हो, यदि कोई इतिहास-रसिक श्रीमान् या साहसी प्रेस-प्रोप्राइटर इसका उल्था हिन्दी में करा डाले और इतिहास-प्रेमी भाइयों का उपकार करे।

फागन सुदि ११ ।
संवत् १९६५ ।

देवीप्रसाद,
जोधपुर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

# सूचीपत्र ।


| | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १ | मुसलमान बादशाह ... ... ... | १ |
| २ | लाहौर के तुर्क बादशाह ... ... ... | २ |
| ३ | दिल्ली के ग़ुलाम बादशाह ... ... | ३ |
| ४ | ख़िलजी बादशाह ... ... ... | ६ |
| ५ | तुग़लक़ बादशाह ... ... ... | ६ |
| ६ | लोदी पठान बादशाह ... ... ... | ७ |
| ७ | सैयद बादशाह ... ... ... | ७ |
| ८ | फिर लोदी पठान बादशाह ... ... | ८ |
| ९ | मुग़ल बादशाह ... ... ... | ८ |
| १० | सूर पठान बादशाह ... ... ... | ८ |
| ११ | फिर मुग़ल बादशाह ... | ९ |
| १२ | दक्षिण के ब्राह्मणी बादशाह ... ... | १० |
| १३ | बीजापुर के तुर्क ग़ुलाम बादशाह ... ... | १२ |
| १४ | अहमदनगर के ब्राह्मणकुली बादशाह ... | १३ |
| १५ | तैलिंग के तुर्कमान बादशाह ... ... | १५ |
| १६ | बिदुर के ग़ुलाम बादशाह ... ... | १६ |
| १७ | बराड़ के हिन्दूकुली बादशाह ... | १७ |
| १८ | मालवे के ग़ोरी तथा ख़िलजी बादशाह ... | १७ |
| १९ | बुरहानपुर के फ़ारूक़ी बादशाह ... | १९ |


For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir




| | | |
|---|---|---|
| २० | गुजरात के कलाल बादशाह ... ... | २० |
| २१ | सिंध (ठट्ठे) के जाम तथा आगूँ जाति के बादशाह | २२ |
| २२ | मुलतान के लंगा बादशाह ... ... | २५ |
| २३ | कश्मीर के पांडव-वंशी मुसलमान और चक जाति के बादशाह ... ... ... ... | २६ |
| २४ | बंगाल के बादशाह ... ... ... | २९ |
| २५ | जौनपुर के बादशाह ... ... ... | ३१ |
| २६ | सिक्खों की दसों बादशाही ... ... | ३३ |


For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

# यवनराजवंशावली

अर्थात्

भारतवर्षीय मुसलमान बादशाहों की वंशावली आदि का साल संवत सहित वर्णन ।

## हिन्दुस्तान में मुसलमान बादशाह ।

हिन्दुस्तान में मुसलमानों की चढ़ाई तो सन् ६६ हिजरी, विक्रम संवत् ७४२ से ही अरब की तरफ़ से होने लगी थी और सिंध में कुछ वर्षों तक बग़दाद के ख़लीफ़ों का अमल रहा था । फिर हिन्दुओं ने अरबों को सिंध से निकाल दिया । उसके कई सौ वर्ष पीछे मुसलमान तुर्कों की दूसरी चढ़ाई काबुल की तरफ़ से पंजाब पर हुई और जब ही से मुसलमानों के राज की नीव हिन्दुस्तान में जमी ।

पंजाब के हिन्दू राज्य की राजधानी लाहौर में थी, जिसकी अमलदारी की सीमा दक्षिण सरहिन्द के पास दिल्ली के राज्य से मिलती थी और सरहिन्द से लेकर उत्तर में लमग़ान तक, जो काबुल के पास है, और कश्मीर से मुलतान तक लाहौर राज्य की सीमा थी ।

इछपाल, जयपाल और आनन्दपाल वहाँ के राजा ग़ज़नी के तुर्क बादशाह नासिरउद्दीन सुबुकतगीन और उसके बेटे महमूद से लड़ते रहे और फिर उनके ताबेदार हो गये थे । आनन्दपाल का बेटा जयपाल था, उससे महमूद ने लाहौर छीन लिया। तबसे पंजाब

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



का देश तुर्कों के हाथ में चला गया और महमूद के वंश में १४ बादशाह १६० वर्ष तक उस देश को भोगते रहे। फिर ग़ोर के बादशाहों का अमल हुआ। जयपाल को तवारीख़ फ़रिश्ता में ब्राह्मण और अजमेर के राजा का सम्बन्धी लिखा है।

## लाहौर के तुर्क बादशाह

| नंबर | नाम | हिजरी सन् | विक्रम संवत् |
|---|---|---|---|
| १ | सुलतान महमूद ग़ज़नवी ... ... | ४०४ | १०७० |
| २ | सुलतान मुहम्मद महमूद का बेटा ... | ४२१ | १०८७ |
| ३ | सुलतान मसऊद महमूद का बेटा ... | ४२१ | १०८७ |
| ४ | अमीर मोदूद सुलतान महमूद का बेटा ... | ४३३ | १०९८ |
| ५ | सुलतान मसऊद मोदूद का बेटा ... | ४४१ | ११०६ |
| ६ | अबुल अली मोदूद का बेटा ... ... | ४४१ | ११०६ |
| ७ | सुलतान अबदुल रशीद महमूद का बेटा ... | ४४२ | ११०७ |
| ८ | फ़र्रुख़ज़ाद मसऊद का बेटा ... ... | ४४३ | ११०८ |
| ९ | सुलतान इब्राहीम मसऊद का बेटा ... | ४५० | १११५ |
| १० | मसऊद इब्राहीम का बेटा ... ... | ४८१ | ११४५ |
| ११ | शेरज़ाद मसऊद का बेटा ... ... | ५०८ | ११७१ |
| १२ | अरसलाँ ख़ाँ मसऊद का बेटा ... ... | ५०९ | ११७२ |
| १३ | बहरामशाह मसऊद का बेटा ... ... | ५१२ | ११७५ |

यह सन् हर एक बादशाह के तख़्त पर बैठने का मूल ग्रंथ के अनुसार है और इसके बराबर जो विक्रम संवत् है वह पाठकों के सुभीते के लिए गणित करके रक्खा गया है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



१४ खुसरोशाह बहराम का बेटा ... ... ५२५ ११८८
१५ खुसरो मलिक खुसरोशाह का बेटा ... ५५५ १२१४

खुसरो को सन् ५८२ (संवत् १२४३) में शहाबुद्दीन ग़ोरी ने पकड़ कर अपने बड़े भाई ग़यासुद्दीन के पास ग़ज़नीं में भेज दिया।

## दिल्ली के बादशाह

शहाबुद्दीन ने जब लाहौर का राज लिया तो उस वक्त दिल्ली में पृथ्वीराज चौहान राज करता था। उसके दादा बीसलदेव ने दिल्ली तंवरों से जीत ली थी और तीन पीढ़ी से चौहानों के कब्ज़े में थी। पृथ्वीराज रासे में जो पृथ्वीराज का अपने नाना अनंगपाल तंवर की गोद बैठना और इस प्रसंग से दिल्ली का राज पाना लिखा है सो ग़लत है। यह कथा बहुत पीछे की गढ़ी हुई है क्योंकि बेटी के बेटे को गोद लेने की रीति राजपूताने में आजकल भी नहीं है और पहले भी नहीं थी।

शहाबुद्दीन ने लाहौर लेने के ५ वर्ष पीछे सन् ५८७ (१२४८) में दिल्ली पर चढ़ाई की। दिल्ली से ४० कोस पर, सरस्वती नदी के किनारे पर, पृथ्वीराज ने दो लाख सवारों और ३००० हाथियों से जा कर उसको हरा दिया। वह पृथ्वीराज के भाई खांडेराय के हाथ से ज़ख़मी होकर मुर्दों की लाशों में पड़ा था। लश्कर तो भाग गया था और ग़ुलाम, जो उसको ढूंढ़ते फिरते थे, उठाकर रातों-रात २० कोस वहीं ले गये जहाँ उसका भागा हुआ लश्कर ठहरा था।

शहाबुद्दीन इस तरह जीता बच कर ग़ज़नी को गया और सन् ५८८ (संवत् १२४९) में फिर १ लाख ७ हज़ार फौज़ लेकर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



लड़ने को आया। पृथ्वीराज भी ३ लाख राजपूत और पठान सवारों से फिर उसी सरस्वती नदी पर जाकर शहाबुद्दीन को धमकाने लगा। शहाबुद्दीन ने कहा कि मैं तो अपने भाई के हुक्म से लाचार हूँ। वह भेजता है तो आता हूँ। अब जो तुम कुछ मुहलत दो तो मैं भाई की मंजूरी मँगाकर सुलह करलूँ। सरहिंद से लेकर पंजाब और मुलतान तक के मुल्क तो हमारे पास रहें। बाक़ी हिन्दुस्तान तुम्हारा है। पृथ्वीराज मुहलत देकर गाफ़िल हो गया। सुलतान ने उसी रात को सोते हुए राजपूतों पर छापा मारा। राजपूत तो भी खूब लड़े, मगर हार गये। खांडेराय और पृथ्वीराज मारे गये। शहाबुद्दीन अजमेर तक लूटमार करके दिल्ली पर गया। वहाँ के हाकिम ने लाचारी से नज़राना देकर पीछा छुड़ाया। शहाबुद्दीन दिल्ली से ७० कोस पर क़स्बे कहराम में अपने ग़ुलाम क़ुतुबुद्दीन ऐबक को छोड़ कर हिमालय पहाड़ में लूटमार करता हुआ ग़ज़नी को चला गया। फिर क़ुतुबुद्दीन ने चढ़ाई करके मेरठ और दिल्ली के क़िले पृथ्वीराज और खांडेराय के भाई बेटों से छीन लिये और सन् ५८९ (संवत् १२५७) में कोल को जीत कर दिल्ली में अपना तख़्त जमाया। कोल से आगे क़न्नौज के राजा जयचंद की अमलदारी थी। इसी वर्ष शहाबुद्दीन ने क़न्नौज पर चढ़ाई की। जयचंद लड़ाई में क़ुतुबुद्दीन के तीर से मारा गया और क़न्नौज का राज भी दिल्ली में शामिल हो गया।

पृथ्वीराज रासे में जो पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन को ७ बेर पकड़ पकड़ कर छोड़ देना लिखा है, ग़लत है। उसके साल, संवत् और नाम वग़ैरः कुछ भी मुसलमानों की तवारीख़ से नहीं मिलते

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



हैं। संयोगता के स्वयंवर रचने और संयोगता को पृथ्वीराज के भगा ले जाने तथा इस जलन से जयचंद के शहाबुद्दीन को बुलाने और मदद देकर पृथ्वीराज के सर्वनाश करा देने की कथायें भी जो रासे में लिखी हैं सब चौहानों के पक्षपात से उनके भाटों की गढ़ी हुई हैं। उसी रासे में पृथ्वीराज को जयचंद की मौसी का बेटा लिखा है। जो यह सच है तो पृथ्वीराज जयचंद का भाई था। फिर कैसे अपने भाई की क्वारी बेटी, जो बहन लगती थी, भगा ले जाता। क्या हिंदू राजा ऐसे ही अधर्मी थे? दूसरे शहाबुद्दीन से जयचंद के मिल जाने का पता कुछ भी फ़ारसी तवारीख़ से नहीं लगता और विचार करने से भी यह बात सिद्ध नहीं होती है; क्योंकि जो ऐसा हुआ होता तो शहाबुद्दीन जयचंद का कभी इतनी जल्दी सर्वनाश नहीं कर देता। तीसरी बात शहाबुद्दीन को पृथ्वीराज के तीर मारकर मारने की भी ग़लत है। शहाबुद्दीन को तो सन् ६०२ ( संवत् १२६२ ) में गक्कड़ों ने सिंध नदी पर मारा था।

शहाबुद्दीन से लेकर आज के ५० वर्ष पहले तक दिल्ली में जितने बादशाह हुए हैं उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं।

| | सन् | संवत् |
|---|---|---|
| १ शहाबुद्दीन ... ... ... | ५८९ | १२५० |
| २ कुतुबुद्दीन शहाबुद्दीन का गुलाम ... | ६०२ | १२६२ |
| ३ आराम शाह कुतुबुद्दीन का बेटा ... | ६०६ | १२६५ |
| ४ शमसुद्दीन एलतमश कुतुबुद्दीन का गुलाम... | ६०७ | १२६८ |
| ५ रुकनुद्दीन फ़ीरोज़शाह शमसुद्दीन का बेटा ... | ६३३ | १२९२ |
| ६ रज़िया सुलतान शमसुद्दीन की बेटी ... | ६३४ | १२९३ |

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ मोअ़ज़्ज़ुद्दीन बहराम शाह शमसुद्दीन का बेटा | | ६३७ | १२९६ |
| ८ अलाउद्दीन मसऊद शाह फ़ीरोज़शाह का बेटा | | ६३९ | १२९९ |
| ९ नासिरुद्दीन महमूद शाह शमसुद्दीन का बड़ा बेटा | | ६४४ | १३०३ |
| १० ग़यासुद्दीन बलबन शमसुद्दीन का ग़ुलाम | ... | ६६३ | १३३१ |
| ११ मोअ़ज़्ज़ुद्दीन कैकुबाद नासिरुद्दीन का बेटा, बलबन का पोता | ... | ६८५ | १३४७ |
| १२ शमसुद्दीन कैकाऊस कैकुबाद का बेटा | ... | ६८७ | १३४५ |

कैकुबाद और कैकाऊस के पीछे शहाबुद्दीन के ग़ुलामों की बादशाही जाती रही और ख़िलजियों के हाथ लगी।

## ख़िलजी बादशाह

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ जलालुद्दीन फ़ीरोज़ ख़िलजी | ... ... | ६८७ | १३४५ |
| २ अलाउद्दीन ख़िलजी फ़ीरोज़ ख़िलजी का भतीजा | | ६९६ | १३५३ |
| ३ शहाबुद्दीन उमर अलाउद्दीन का बेटा | ... | ७१६ | १३७३ |
| ४ क़ुतुबुद्दीन मुबारक शाह ख़िलजी अलाउद्दीन का बेटा | ... | ७१७ | १३७४ |
| ५ खुसरो ख़ां क़ुतुबुद्दीन का ग़ुलाम | ... | ७२१ | १३७८ |

सन् ७२१ ( संवत् १३७८ ) में ख़िलजियों का राज जाता रहा तुग़लक़ों के हाथ आया।

## तुग़लक़ बादशाह

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ ग़यासुद्दीन तुग़लक़ शाह, ग़यासुद्दीन बलबन के ग़ुलाम मलिक तुग़लक़ का बेटा था उसकी मा जाटनी थी | ... | ७२१ | १३७८ |

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



| | | | |
|---|---|---|---|
| २ मोहम्मद शाह तुग़लक़ ... ... | ७२५ | १३८२ |
| ३ फ़ीरोज़ शाह तुग़लक़ ... ... | ७५२ | १४०८ |
| ४ ग़यासुद्दीन तुग़लक़ फ़तह ख़ां का बेटा फ़ीरोज़ शाह का पोता ... | ७९० | १४४५ |
| ५ अबूबक्र तुग़लक़ ज़फ़र खां का बेटा, फ़ीरोज़ शाह का पोता ... | ७९१ | १४४५ |
| ६ नासिरुद्दीन मोहम्मद शाह फीरोज़ शाह का बेटा | ७९२ | १४४६ |
| ७ सिकन्दर शाह नासिरुद्दीन का बेटा ... | ७९६ | १४५० |
| ८ नासिरुद्दीन महमूद शाह नासिरुद्दीन मोहम्मद शाह का बेटा ... | ७१६ | १४५० |

नासिरुद्दीन ८१५ (सं० १४६९) में मर गया और दिल्ली की बादशाही शहाबुद्दीन गोरी के तुरकी गुलामों वग़ैरह से जाती रही। दौलत ख़ां लोदी बादशाह हुआ। यह पठान था।

## लोदी पठान

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ दौलत ख़ां लोदी नासिरुद्दीन का नौकर ... | ८१६ | १४७० |

## सैयद बादशाह

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ ख़िज़र ख़ां सुलतान फ़ीरोज़ का नौकर था ... और जब अमीर तैमूर ने नासिरुद्दीन तुग़लक़ पर सन् ८०० (संवत् १४५४) में चढ़ाई की थी तो उससे मिल गया था और वह इसको अपनी तरफ़ से लाहौर में हाकिम बन गया | ८१७ | १४७१ |

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



था। जहाँ से इसने चढ़ाई करके दिल्ली दौलत ख़ां लोदी से छीन ली।

| | | | |
|---|---|---|---|
| २ | मोअ्ज़ुद्दीन अबुलफ़तह मुबारक शाह ... | ८२४ | १४७७ |
| ३ | मोहम्मद शाह फ़रीद ख़ां का बेटा ख़िज़र ख़ां का पोता। ... | ८३७ | १४९० |
| ४ | सुलतान अलाउद्दीन मोहम्मद शाह का बेटा। यह सन् ८५५ (संवत् १५०८) में बहलोल लोदी को राज देकर बदाऊँ चला गया। ... | ८४९ | १५०२ |

## पठान बादशाह

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | बहलोल लोदी मोहम्मद शाह का नौकर था। | ८५५ | १५०८ |
| २ | सिकन्दर लोदी बहलोल का बेटा ... | ८९४ | १५४५ |
| ३ | सुलतान इब्राहीम सिकन्दर लोदी का बेटा सन् ९२३ (संवत् १५८३) में बाबर बादशाह ने इस को मार कर दिल्ली की बादशाही ले ली ... | ९२३ | १५७४ |

## मुग़ल बादशाह

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | ज़हीरुद्दीन मोहम्मद बाबर शाह बादशाह ग़ाज़ी अमीर तैमूर का परपोता ... | ९३२ | १५८३ |
| २ | नसीरुद्दीन मोहम्मद हुमायूं बादशाह बाबर का बेटा ... | ९३७ | १५८७ |

## फिर पठान बादशाह

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | शेरशाह सूर हुमायूं बादशाह को भगाकर ... | ९४७ | १५९७ |
| २ | सलीम शाह सूर शेर शाह का बेटा ... | ९५२ | १६०२ |

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



| | | | |
|---|---|---|---|
| ३ | मोहम्मद शाह अदली सलीम शाह का साला | ९५५ | १६०५ |
| ४ | सिकन्दर शाह सूर ... ... | ९५५ | १६०५ |

## फिर मुग़ल

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | हुमायूं बादशाह सिकन्दरसूर को हराकर ... | ९६२ | १६११ |
| २ | जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर शाह बादशाह ग़ाज़ी हुमायूं का बेटा | ९६३ | १६१२ |
| ३ | नूरुद्दीन जहाँगीर शाह बादशाह ग़ाज़ी अकबर का बेटा ... | १०१४ | १६६२ |
| ४ | शहाबुद्दीन मोहम्मद शाहजहाँ बादशाह ग़ाज़ी जहाँगीर का बेटा ... | १०३७ | १६८४ |
| ५ | मुहीउद्दीन मोहम्मद औरंगज़ेब आलमगीर बादशाह ग़ाज़ी ... | १०६८ | १७१५ |
| ६ | आज़म शाह औरंगज़ेब का बेटा ... | १११८ | १७६३ |
| ७ | शाहआलम बहादुर शाह औरंगज़ेबका बड़ा बेटा | १११९ | १७६४ |
| ८ | मोअज़्ज़ुद्दीन जहाँदार शाह शाहआलम का बेटा | ११२४ | १७६५ |
| ९ | जलालुद्दीन फ़र्रुख़सियर शाहआलम बहादुर शाह का पोता अज़ीमुश्शान का बेटा | ११२५ | १७६९ |
| १० | रफ़ीउद्दरजात शाहआलम का पोता रफ़ी उलक़दर का बेटा | ११३१ | १७७६ |
| ११ | रफ़ीउद्दौला शाहआलम का पोता रफ़ी उद्-दरजात का भाई | ११३१ | १७७६ |
| १२ | मोहम्मदशाह,जहाँदारशाहका बेटा शाहआलम का पोता | ११३२ | १७७६ |

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १३ | अहमद शाह मोहम्मद शाह का बेटा | .... | ११६१ | १८०५ |
| १४ | आलमगीर सानी मोअ़ज़्ज़ुद्दीन जहाँदार शाह का बेटा | | ११६९ | १८११ |
| १५ | महीउलसुन्नत कामबख़्श का बेटा औरंगज़ेब का पोता | | ११७३ | १८१६ |
| १६ | मिरज़ा जवांबख़्त आलीगोहर का बेटा | ... | ११७४ | १८१७ |
| १७ | आलीगोहर शाहआलम बादशाह दूसरा आलमगीर सानी का बेटा | ... | ११७४ | १८१७ |
| १८ | अकबर शाह दूसरा शाहआलम का बेटा | ... | १२२१ | १८५३ |
| १९ | अबूज़फ़र बहादुर शाह अकबर शाह का बेटा | | १२५३ | १८९४ |

बहादुर शाह को अंग्रेज़ों ने संवत् १९१४ के ग़दर में शामिल होने से संवत् १९१५ में क़ैद करके रंगून में भेज दिया। जहाँ वह संवत् १९२० में मर गया और हिन्दुस्तान से मुसलमानों की बादशाही का नाम जाता रहा।

## दक्षिण के बादशाह

दिल्ली और दक्षिण के बीच में मालवे और गुजरात के हिन्दू राज्य थे। वे तो क़ुतुबद्दीन और शमसुद्दीन ने पंवारों और सोलंखियों से ले लिये थे। मालवे और गुजरात से आगे दक्षिण में देवगढ़ तैलिंग और करनाटक के ३ बड़े राज्य थे। जिनमें रामदेव लदरदेव और बल्लालदेव राज करते थे। उनको अलाउद्दीन ख़िलजी ने जीत कर अपनी अमलदारी दक्षिण समुद्र तक बढ़ा ली थी परन्तु तुग़लक़ बादशाहों से इतनी बड़ी बादशाही न सँभल सकी और उसके

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



टुकड़े टुकड़े होकर कई छोटे छोटे बादशाहों में बँट गये जो उन्हीं के नौकरों में से थे।

इन छोटे छोटे बादशाहों में सबसे बड़े कुलबरगे के ब्राह्मणी बादशाह थे। इनका मूल पुरुष हसन नाम एक ग़रीब मुसलमान दिल्ली में गांगू नाम एक ज्योतिषी की नौकरी करता था। उसी के बरदान और सहारे से मोहम्मद तुग़लक़ के पास नौकर होकर दक्षिण में गया और वहाँ बे बन्दाबस्ती देख कर बादशाह बन बैठा और अपना नाम हसन गांगूय ब्राह्मणी रक्खा। उसके वंश में इतने बादशाह हुए।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | हसन गांगू ब्राह्मणी ... ... | ७४८ | १४०४ |
| २ | मोहम्मद शाह ब्राह्मणी हसन का बेटा ... | ७५९ | १४१५ |
| ३ | मजाहदशाह ब्राह्मणी मोहम्मदशाह का बेटा | ७७६ | १४३१ |
| ४ | दाऊद शाह ब्राह्मणी हसन का बेटा ... | ७७९ | १४३४ |
| ५ | महमूद शाह ब्राह्मणी हसन का बेटा ... | ७७९ | १४३४ |
| ६ | ग़यासुद्दीन ब्राह्मणी महमूद शाह का बेटा ... | ७९९ | १४५३ |
| ७ | शमसुद्दीन ब्राह्मणी महमूद शाह का बेटा ... | ७९९ | १४५३ |
| ८ | फ़ीरोज़शाह ब्राह्मणी दाऊदशाह का बेटा ... | ८०० | १४५४ |
| ९ | अहमदशाह ब्राह्मणी फ़ीरोज़शाह का भाई ... | ८२५ | १४७८ |
| १० | अलाउद्दीन ब्राह्मणी अहमदशाह का बेटा ... | ८३८ | १४९१ |
| ११ | हुमायूं शाह ब्राह्मणी अलाउद्दीन का बेटा ... | ८६२ | १५१५ |
| १२ | निज़ामशाह ब्राह्मणी हुमायूं का बेटा ... | ८६५ | १५१७ |
| १३ | मोहम्मदशाह ब्राह्मणी निज़ामशाह का बेटा | ८६७ | १५१९ |



For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



१४ महमूदशाह ब्राह्मणी मोहम्मदशाह का बेटा ८८७ १५३९
१५ अहमदशाह ब्राह्मणी महमूदशाह का बेटा ९२४ १५७५
१६ अलाउद्दीन ब्राह्मणी अहमदशाह का बेटा ९२७ १५७८
१७ वलीउल्लाह ब्राह्मणी महमूदशाह का बेटा ... ९२९ १५७९
१८ कलीमुल्लाह ब्राह्मणी वलीउल्लाह का भाई ... ...

यह ९३५ ( सं० १५८५ ) में मरगया। नाम का बादशाह था क्योंकि कुलवरगे का राज्य भी २।३ पीढ़ियों से ५ बड़े बड़े सरदारों ने बांट कर अहमदनगर, बीजापुर, बिदुर, बराड़, और गोलकुंडे में अपने अपने राजसिंहासन अलग अलग जमा लिए थे।

## बीजापुर के बादशाह

बीजापुर के बादशाहों का मूलपुरुष यूसुफ़ आदिलशाह निज़ाम शाह बहमनी का मोल लिया हुआ एक तुरकी ग़ुलाम था, जिसको पीछे से रूम के सुलतान मोहम्मद का भाई बताया गया है। और यह कहा गया है कि रूम में यह दस्तूर था कि बड़ा भाई तख़त पर बैठ कर छोटे भाइयों को मार डालता था। जब सुलतान मोहम्मद सन् ८५४ में अपने बाप सुलतान मुराद के पीछे तख़्त पर बैठा तब उसने यूसुफ़ के मारने का हुक्म दिया। परन्तु उसकी मां ने उसे एक सौदागर की ग़ुलामी में देदिया। वह सौदागर उसे दक्खिन में लाकर निज़ाम शाहबहमनी को बेंच गया। जो, मोहम्मदशाह के राज में बढ़ते बढ़ते बीजापुर का तर्फ़दार (सूबेदार) होगया और उसकी बेटी अहमदशाह को ब्याही गई। उन दिनों ब्राह्मणी बादशाहों की बादशाही डगमगा रही थी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूबेदार मुल्क दबाते जाते थे। यूसुफ़ आदिलशाह भी बीजापुर और रायचूर वग़ैरा के परगने दबा बैठा।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ यूसुफ़ आदिलशाह ... ... | ८९५ | १५४७ |
| २ इसमाईल आदिलशाह यूसुफ़ का बेटा .... | ९१६ | १५६७ |
| ३ मल्लूआदिलशाह इस्माईलशाह का बेटा ... | ९४१ | १५९१ |
| ४ इब्राहीम आदिलशाह इसमाईल का बेटा ... | ९४१ | १५९१ |
| ५ अली आदिलशाह इब्राहीम का बेटा ... | ९६५ | १६१४ |
| ६ इब्राहीम आदिलशाह दूसरा तुहमास्प का बेटा, पहिले इबराहीम का पोता ... ... | ९८८ | १६३७ |
| ७ मोहम्मद आदिलशाह दूसरा ... ... | १०२६ | १६७४ |
| ८ अली आदिलशाह दूसरा मोहम्मद शाह का बेटा ... ... | १०६१ | १७०७ |

९ सिकंदर आदिलशाह

इसको सन् १०९६ (सं० १७४२) में औरंगज़ेब ने क़ैद करके बीजापुर फ़तह कर लिया।

## अहमदनगर के बादशाह

इनका मूल पुरुष तीमा भट नाम एक ब्राह्मण बीजानगर का रहने वाला था, जो अहमदशाह ब्राह्मणी की चढ़ाई में पकड़ा जाकर ग़ुलाम बनाया गया और उसका हसन नाम रक्खा गया। वह शाहज़ादे मोहम्मद के साथ फ़ारसी पढ़कर शिकारी जानवरों का दारोग़ा होगया और मलिक हसन भरलो कहलाने लगा। क्योंकि उसके बाप का नाम भरलो था। फिर निज़ामुल्मुल्क बहरी ख़िताब

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



पाकर तैलिंग देश का तरफ़दार होगया। राजमहेंदरी वग़ैरा कई परगने जागीर में मिले। मोहम्मदशाह के पीछे उसके बेटे महमूदशाह का प्रधान मंत्री होकर राजका सारा काम करने लगा देवगढ़ दौलताबाद और जुनेर वग़ैरा में फिर और जागीरें पाईं। उसका बेटा अहमद निज़ामुल्मुल्क, महमूदशाह बाह्मणी से बाग़ी होकर सन् ८९५ (सं० १५४६) में ख़ुद मुख़्तार हो गया और अहमद-नगर में जो उसीका बसाया हुआ था अपनी राजधानी क़ायम करके बादशाही करने लगा।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | अहमदशाह निज़ाँमुलमुल्क ... ... ... | ८९५ | १५४६ |
| २ | बुरहान निज़ामशाह अहमद का बेटा ... | ९१४ | १५६५ |
| ३ | हुसेन निज़ामशाह बुरहान का बेटा ... | ९६१ | १६१ |
| ४ | मुरतिज़ा निज़ामशाह हुसेन का बेटा .... | ९७२ | १६२१ |
| ५ | मीरान् हुसेन मुरतिज़ा का बेटा ... ... | ९९६ | १६४५ |
| ६ | इसमाइल निज़ामशाह दूसरे बुरहानशाह ... ... का बेटा, हुसेन का पोता ... | ९९७ | १६४६ |
| ७ | बुरहान निज़ामशाह दूसरा हुसेन का बेटा... | ९९९ | १६४८ |
| ८ | इब्राहीम निशामशाह दूसरे बुरहानशाह का बेटा, इसमाईल का भाई ... | १००३ | १६५१ |
| ९ | अहमद निज़ामशाह शाह ताहिर का बेटा ... | १००३ | १६५१ |
| १० | बहादुरशाह इब्राहीम निज़ामशाह का बेटा | १००४ | १६५२ |
| ११ | मुरतिज़ा निज़ामशाह शाहअली का बेटा, पहले बुरहानशाह का पोता ... | १००७ | १६५५ |
| १२ | अलीबुराहन निजामुल्मुल्क | | |

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



अली से शाहजहाँ बादशाह ने सन् १०४३ (संवत् १६८०) में अहमदनगर का बाक़ी मुल्क छीनकर अपनी अमलदारी में मिला लिया।

## तैलिंग के बादशाह
## जो .कुतुबशाही कहलाते थे

इनका मूल पुरुष सुलतान .कुली तुर्कमान जाति की शाखा बहारलू में से था। मोहम्मदशाह ब्राह्मणी के राज में वलायत से दक्खिन में आकर .गुलामों में भरती हुआ और गोलकुंडे में जागीर पाकर तैलिंगदेश के बंदोबस्त पर गया और वहाँ यूसुफ़ आदिल शाह अहमदनिज़ाम शाह और इमादुलमुल्क की देखादेखी सन ९१८ में सुलतान महमूद से बाग़ी होकर .खुद मुख़तार होगया और और .कुतुबशाह नाम रख कर बादशाही करने लगा।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | सुलतान .कुली .कुतुब शाह ... ... | ९१८ | १५६९ |
| २ | जमशेद .कुतुब शाह सुलतान .कुली का बेटा ... | ९५० | १६०० |
| ३ | इब्राहीम .कुतुब शाह सुलतान .कुली का बेटा... | ९५७ | १६०७ |
| ४ | मोहम्मद कुली .कुतुब शाह इब्राहीम का बेटा ... | ९८९ | १६३८ |
| ५ | सुलतान मोहम्मद कुतुब शाह मोहम्मद .कुली का भतीजा | | |
| ६ | अबदुल्लाह .कुतुबुलमुल्क | | |
| ७ | अबुल हसन ताना शाह अबदुल्ला का जमाई | | |

औरंगज़ेब बादशाह ने सन् १०९८ (सं० १७४४) में इसको क़ैद करके गोलकुंडा और हैदराबाद फ़तह कर लिया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



# बिदुर के बादशाह

## जो बरीदिया कहलाते थे

इनका मूल पुरुष क़ासिमबरीद बुरहानपुर के सुलतान मोहम्मशाह फ़ारूकी का ग़ुलाम था। उसने सुलतान महमूद ब्राह्मणी के राज में सावा जी मरहटे को मार कर पाटन और जालने वग़ैरा परगनों को फ़तह किया और अड़सा कंधार तथा उदगिर के परगने जागीर में पाकर महमूदशाह से बदल गया और सन् ८९८ (सं० १५४९) के क़रीब बिदुर में बादशाह बन बैठा।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | क़ासिम बरीद | | | |
| २ | अमीर अली बरीद क़ासिम का बेटा | ... | ९१० | १५६१ |
| ३ | अली बरीद ४५ साल | ... | ९२२ | १५७३ |
| ४ | इबराहीम बरीदशाह अली बरीद का बेटा | ७ साल | ९६७ | १६१६ |
| ५ | क़ासिम बरीदशाह ३ साल | ... | ९७३ | १६२२ |
| ६ | क़ासिम बरीद का बेटा मिरज़ा अली | ... | ९७६ | १६२५ |
| ७ | अमीर बरीद मिरज़ा अली को क़ैद करके अमीर | | १०१६ | १६६४ |

अमीर बरीद से १०१८ (सं० १६६६) में आदिल और निज़ामशाह ने क़िले और मुल्क छीन कर। आधा आधा राज्य बाँट लिया।

---

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



# बराड़ के बादशाह

## जो इमादुल्मुल्क कहलाते थे

इनका मूल पुरुष फ़तहउल्लाह इमादुलमुल्क बीजानगर के हिंदुओं में से था; जो बचपन में पकड़ा जाकर बराड़के सेनापति ख़ानजहाँका ग़ुलाम बनाया गया था। उसके मरे पीछे मोहम्मद शाह ब्राह्मणी के ग़ुलामों में घुसकर बादशाह का कृपापात्र हो गया। इमादुल मुल्क ख़िताब पाकर बराड़ का सेनापति हुआ और वहीं सन् ८९२ में बाग़ी होकर बादशाह बन बैठा।

१ इमादुल मुल्क
२ अलाउद्दीन इमादुलमुल्क का बेटा
३ दरिया इमादुल मुल्क अलाउद्दीन का बेटा
४ बुरहान इमादशाह दरिया का बेटा
५ तफ़ावलख़ां दक्खिनी बुरहान का ग़ुलाम
सन् ९८२ (१६४१) में इसको पकड़ कर मुरतिज़ा निज़ाम शाह ने बराड़ को अहमदनगर में मिला लिया।

# मालवे के बादशाह

मालवे में पवाँरों का राज था। सन् ६३१ ( संवत् १३२० ) में सुलतान शमसुद्दीन ने भेलसा और उज्जैन फ़तह करके महाकाल के मंदिर और राजा विक्रमाजीत की मूर्ति को तोड़ डाला, मगर उसके पीछे हिन्दुओं ने मालवा फिर ले लिया। तब सन् ७०४

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



( सं०१३६१ ) में अलाउद्दीन ख़िलजी की फ़ौज ने हमला करके वहाँ के राजा गोगादेव को हराया और उज्जैन मंडू धारानगरी तथा चंदेरी में क़बज़ा कर लिया उस दिन से मालवा १०० वर्ष तक दिल्ली के नीचे रहा। फिर वहाँ की बादशाही अलग हो गई।

दिलावर ख़ां ग़ोरी सुलतान फ़ीरोज़ तुग़लक़ के बड़े अमीरों में से था। उसको सुलतान महमूद तुग़लक़के राज में मालवे की हकूमत मिली थी। सन् ८०४ (सं० १४५८) के पीछे जब कि महमूद तुग़लक़ की बादशाही बिगड़ी दिलावरख़ाँ ख़ुद मुख़तार होकर बादशाह बन गया। उसकी औलाद में ११ बादशाह सन् ९७० (सं० १६१९) तक हुए। इनकी राजधानी पहिले तो धार में थी फिर मांडो के क़िले में रही।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ दिलावर ख़ाँग़ोरी | ... | ८०४ | १४५८ |
| २ होशंग दिलावरखां का बेटा | ... | ८०८ | १४६२ |
| ३ मोहम्मद शाह होशंग का बेटा | ... | ८३८ | १४९१ |
| ४ महमूद ख़िलजी होशंग का भानजा | ... | ८३९ | १४९२ |
| ५ ग़यासुद्दीन ख़िलजी महमूद का बेटा | ... | ८७३ | १५३० |
| ६ नासिरुद्दीन ख़िलजी ग़यासुद्दीन का बेटा | ... | ९०५ | १५५६ |
| ७ महमूद ख़िलजी नासिरुद्दीन का बेटा | ... | ९१६ | १५६७ |
| ८ गुजरात का सुलतान बहादुर शाह | ... | ९३७ | १५८७ |
| ९ सुलतान क़ादिर ख़िलजियों का ग़ुलाम | ... | ९४२ | १५९२ |
| १० शुजाअख़ां शेरशाह सूर का नौकर | | | |
| ११ बाज़ बहादुर शुजाअख़ां का बेटा | ... | ९६२ | १६११ |

बाज़बहादुर से सन् ९७० (सं० १६१९ ) में अकबर बादशाह की फ़ौज ने मालवे का मुल्क छीन लिया ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



# बुरहानपुर के बादशाह

मलिक राजा फ़ारूक़ी सुलतान फ़ीरोज़ तुग़लक़ के नौकरों में से सन् ७७२ ( संवत् १४४७ ) में ख़ानदेश का हाकिम हुआ था। तुग़लक़ों की बादशाही बिगड़ने पर वह भी ख़ुदमुख़तार हो गया और उसकी औलाद में बुरहानपुर के बादशाह हुए क्योंकि उनकी राजधानी बुरहानपुर में थी।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ मलिक राजा फ़ारूक़ी | ... | ७७२ | १४४७ |
| २ नसीर ख़ाँ फ़ारूक़ी मलिक राजा का बेटा | ... | ८०१ | १४५५ |
| ३ मीरान आदिलखाँ फ़ारूक़ी नसीर ख़ाँ का बेटा | | ८४१ | १४९४ |
| ४ मुबारक ख़ाँ फ़ारूक़ी आदिल ख़ाँ का बेटा | ... | ८४४ | १४९७ |
| ५ आदिल ख़ाँ दूसरा मुबारक ख़ाँ का बेटा | ... | ८६१ | १५१३ |
| ६ दाऊद ख़ाँ फ़ारूक़ी मुबारक ख़ाँ का बेटा | ... | ८९७ | १५५८ |
| ७ ग़ज़नी ख़ाँ दाऊद ख़ाँ का बेटा ११ दिन | | | |
| ८ आलम ख़ाँ फ़ारूक़ी | | | |
| ९ आदिल ख़ाँ फ़ारूक़ी नसीर ख़ाँ का बेटा | | | |
| १० मोहम्मदशाह फ़ारूक़ी आदिल ख़ाँ का बेटा | .... | ९२६ | १५७६ |
| ११ मुबारक शाह आदिल ख़ाँ का बेटा | ... | ९४२ | १५९२ |
| १२ मोहम्मद शाह मुबारक शाह का बेटा | ... | ९७४ | १६१३ |
| १३ हसनख़ाँ फ़ारूक़ी मोहम्मद शाह का बेटा | ... | ९८४ | १६३३ |
| १४ राजा अली ख़ाँ मुबारक शाह फ़ारूक़ी का बेटा | | | |
| १५ बहादुर ख़ाँ राजा अलीख़ाँ का बेटा | ... | १००५ | १६५३ |

राजा अलीख़ाँ से सन् १००८ ( सं० १६५६ ) में अकबर बादशाह की फ़ौज ने आसेर का क़िला लेकर ख़ानदेश में अमल कर लिया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



# गुजरात के बादशाह

शहाबुद्दीन ग़ोरी के समय में गुजरात का राजा भीमदेव सोलंखी था। उसपर सन् ५७४ (१२३५ वा ३६) में शहाबुद्दीन ने मुलतान की तरफ़ से चढ़ाई की। भीमदेव ने लड़कर सुलतान को हराया। बहुत से मुसलमानों को मारा। सुलतान भाग कर बड़ी मेहनत और मुशकिल से ग़ज़नीं में पहुँचा।

सन् ५९३ (१२५४, ५५) में क़ुतुबुद्दीन ने दिल्ली से चढ़ाई कर के भीमदेव से बदला लिया और नहर वाला ( अनहलपुरुपट्टन ) को फ़तह करके वहाँ अपना हाकिम बैठाया। परन्तु क़ुतुबुद्दीन के मरे पीछे भीमदेव ने फिर अमल कर लिया। उसके पीछे बीसलदेव, अरजनदेव, सारंगदेव और करण बाघेला बारी बारी से गुजरात के राजा हुए। सन् ६९७ ( संवत् १३५५ ) में अलाउद्दीन की फ़ौज ने करण को निकाल कर गुजरात फ़तह कर ली। तबसे फ़ीरोज शाह के समय तक दिल्ली से गुजरात में हाकिम आते रहे। सबसे पिछला हाकिम ज़फ़र ख़ाँ था। वह अपने मालिक की कमज़ोरी से गुजरात का मालिक हो गया। उसकी जाति, कुल और व्यवहार का ब्यौरा इस प्रकार है।

टांक जाति के कलालों में से दो भाई साढू और सारन नाम थानेश्वर के किसी गाँव में रहते थे। एक दिन सुलतान मोहम्मद तुग़लक़ का चचेरा भाई फ़ीरोज़ख़ाँ शिकार खेलता हुआ उनके गाँव में जा निकला। साढू सामुद्रक जानता था। उसने फ़ीरोज़ ख़ाँ के पाँव में बादशाह होने की रेखा देखकर अपनी बहन उसको ब्याहदी,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



और दोनों भाई उसके साथ दिल्ली में आकर मुसलमान हो गये। साढू का नाम वजीहुलमुल्क रक्खा गया। जब सन् ७४७ (संवत् १४०३) में मोहम्मद तुग़लक़ के पीछे फ़ीरोज़ ख़ां बादशाह हुआ तो उसने वजीहुलमुल्क के बेटे ज़फ़रख़ाँ और शमशेर खाँ को अपने पीने की शराब रखने का काम दिया।

फ़ीरोज़शाह के पोते सुलतान मोहम्मद तुग़लक़ ने सन् ७९३ (सं० १४४८) में ज़फ़र ख़ाँ को गुजरात का सूबेदार करके भेजा। वह वहाँ ज़ोर पकड़कर सन् ८१० (सं० १४६४) में बादशाह बन बैठा और अपना नाम सुलतान मुज़फ़्फ़र रखकर तुग़लक़ों की गिरती हुई बादशाही में ख़ुद मुख़्तार होगया। उस तारीख़ से इतने बादशाह गुजरात में हुए।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ सुलतान मुज़फ़्फ़र | ... | ८१० | १४६४ |
| २ अहमद शाह तातार ख़ाँ का बेटा मुज़फ्फर का पोता | ... | ८१३ | १४६७ |
| ३ मोहम्मद शाह अहमदशाह का बेटा | ... | ८४६ | १४९९ |
| ४ क़ुतुबुद्दीन मोहम्मदशाह का बेटा | ... | ८५५ | १५०८ |
| ५ दाऊदशाह अहमदशाह का बेटा | ... | ८७३ | १५२५ |
| ६ महमूद बेगड़ा क़ुतुबुद्दीन का भाई | .... | ८७३ | १५२५ |
| ७ मुज़फ़्फ़र शाह सुलतान महमूद गुजराती का बेटा | | ९१७ | १५६८ |
| ८ सिकंदर शाह मुज़फ़्फ़र का बेटा | ... | ९३२ | १५८२ |
| ९ महमूद शाह मुज़फ़्फ़र शाह का बेटा | ... | ९४२ | १५९२ |
| १० बहादुर शाह मुज़फ़्फ़र शाह का बेटा | ... | ९४२ | १५९२ |

११ सुलतान महमूद लतीफ़ ख़ाँ का बेटा मुज़-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



| | | | |
|---|---|---|---|
| फ़फ़र शाह का पोता | ... | ९४४ | १५९४ |
| १२ सुलतान अहमद अहमद शाह के पोतों में से | | ९६१ | १६११ |
| १३ सुलतान मुज़फ्फर महमूद का बेटा | ... | ९६९ | १६१८ |

इस मुज़फ़्फ़र से सन् ९८० (सं० १६२९) में अकबर ने गुजरात छीन कर फिर दिल्ली के नीचे डाल ली।

## सिंध के बादशाह

सिंध में अरब लोगों का क़दीम से आना जाना था क्योंकि वे लोग नावों में बैठकर सिंहलद्वीप * को आदम पैग़म्बर के चरणों के दर्शनों को जाया करते थे और हिन्दुलोग मक्के की यात्रा को जाते थे, जब कि वहाँ मूर्तियाँ रक्खी रहती थीं। मुसलमानी मत चलने के पीछे जब मक्के की मूर्तियां तोड़ डाली गईं तो इनका जाना आना बंद हो गया। परन्तु अरब लोग मुसलमान होकर भी सिंहलद्वीप को जाते आते हुए सिंध में आया करते थे और इसी से उनको हिन्दुस्तान के और किसी देश की अपेक्षा सिंध को फ़तह करने और वहाँ अपना धर्म फैलाने का मौक़ा मिला।

पहिली चढ़ाई उन लोगों की सन् ८६ ( ७६२ ) में ख़लीफ़ा वलीद के हुक्म से हुई। सिंध और ईरान के बीच में जो बलोचों का मुल्क मकरान पड़ता है, मुसलमानों ने पहिले उसीको लिया और बलोचों को मुसलमान करके सिंध के हिन्दुओं पर हमला किया।

* सिंहलद्वीप या लंका में जो बड़े पाँव का चिह्न पत्थर पर है उसको मुसलमान तो आदम के और बौद्ध लोग महात्मा बुध के पांव का चिह्न बतलाते हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



उस वक्त सिंध का राजा दाहिर वा धीर था। वह मुसलमानों के अफ़सर मोहम्मद क़ासिम से कई लड़ाइयाँ लड़कर सन् ९३ (७६८) में मारा गया। मोहम्मद क़ासिम ने सिंध फ़तह करके उसकी दो बेटियों को लूट के सामानों के साथ वलीद ख़लीफ़ा के पास राजधानी दमिश्क़ में भेजा। उन्होंने ख़लीफ़ा से कहा कि मोहम्मद-क़ासिम ने हमको तीन रात अपने पास रक्खा है क्या मुसलमानों में यह दस्तूर है कि मालिक से पहले नौकर लोग ऐसी चामचोरी कर लेते हैं। ख़लीफ़ा ने ख़फ़ा हो कर हुक्म लिखा कि मोहम्मद क़ासिम को गाय के चमड़े में सीकर भेज देवें। जब इस तरह उसकी लाश ख़लीफ़ा के पास पहुँची तो उसने उन लड़कियों को दिखाकर कहा कि मैं नालायक़ों को ऐसी सज़ा देता हूँ। लड़कियों ने कहा कि बादशाह को अपने पराये की बात समझ कर काम करना चाहिए। हमको मालूम हो गया कि बादशाह में अक़्ल तो नहीं है परन्तु भाग्बल से ही राज करता है। मोहम्मद क़ासिम और हम तो भाई बहन के समान रहे थे। उसने हमसे कुछ अनीति नहीं की थी परन्तु उसने हमारे बाप-भाइयों को मारा था। हमारा राज छीना था। हमको बादशाही से बांदीपने के दरजे पर पहुँचाया था। इसलिए हमने यह तुहमत लगाकर अपना बदला ले लिया।

इस तरह मोहम्मद क़ासिम जिसने दो ही वर्ष में मुसलमानी धर्म की धाक सिंध से क़न्नौज तक पहुँचा दी थी सन् ९६ (सं० ७७१) में मारा गया और उसके पीछे सिंध में सूमरा जाति के राजपूत राज करने लगे। जब शहाबुद्दीन ग़ोरी ने लाहौर और मुलतान फ़तह किये थे तो अपने एक ग़ुलाम नासिरुद्दीन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



क़बाचा नाम को उच्च में हाकिम बनाकर रक्खा था। उसने सिंध पर चढ़ाई करके ठट्ठे के सिवा और सब मुल्क सूमरों से छीन लिया और क़ुतुबुद्दीन ऐबक के पीछे सिंध का बादशाह बन बैठा। सन् ६२२ ( १२८२ ) में सुलतान शमसुद्दीन एलतमश ने उच्च पर चढ़ाई करके नासिरुद्दीन को भगा दिया और सिंध को दिल्ली के नीचे डाल लिया। सूमरों के पास वही ठट्ठा रह गया। सो मोहम्मद तुग़लक़ के समय में समाजाति के राजपूतों ने उनसे राज छीन लिया। उनका सरदार जामअफ़रा राजा हुआ।

१ जामअफ़रा ३॥ वर्ष
२ जाम जूना १४ वर्ष
३ जाममानी १५ वर्ष
४ जामतम्माची १३ वर्ष
५ जामसलाहुद्दीन ११ वर्ष
६ जामनिज़ामुद्दीन सलाहुद्दान का बेटा २ वर्ष
७ जामअलीशेर, निज़ामुद्दीन का बेटा ६ महीने
८ जामकर्डा तमाची का बेटा १ दिन
९ फ़तहख़ाँ सिकंदर का बेटा १५ वर्ष
१० जामतुग़लक़ सिकंदर का बेटा २८ वर्ष
११ जाम मुबारक ३ दिन
१२ जाम सिकंदर फ़तहख़ाँ का बेटा १॥ वर्ष
१३ जाम संजर ८ वर्ष
१४ जाम नंदानिज़ाम मुद्दीन ६२ वर्ष
१५ जाम फ़ीरोज़ जामनंदा का बेटा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



इससे सन् ९२७ ( १५७८ ) में शाह बेग अरग़ूं ने कंधार की तरफ़ से आकर ठट्ठा फ़तह कर लिया और समाँ लोगों का राज समाप्त होगया।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ शाहबेग अरग़ूं | ... | ९२७ | १५७८ |
| २ हुसेन शाह अरग़ूं, शाह बेग का बेटा | ... | ९३० | १५८१ |
| ३ मिरज़ा ईसातरख़ाँ | ... | ९६२ | १६१२ |
| ४ मिरज़ा बाक़ी | ... | ९६५ | १६१४ |
| ५ मिरज़ा जानी | ... | ९९३ | १६४२ |

इससे सन् १००१ ( १६४९ ) में नवाब ख़ानख़ानाँ ने सिंध फ़तह कर के अकबर बादशाह की सलतनत में शामिल कर दिया।

## मुलतान के बादशाह

सन् ८४७ ( संवत् १५०० ) में जब सैयदों की सलतनत कमज़ोर हो गई और मुग़लों के हमले काबुल क़ंधार और ग़ज़नी की तरफ़ से मुलतान पर होने लगे तो वहाँ के लोगों ने मिलकर शेख़ यूसुफ़ मुलतानी को बादशाह बना लिया। उसने लंगा जाति के राय सहेरा की बेटी से ब्याह किया था, जिससे राय सहरा ने शेख़यूसुफ़ को पकड़ कर मुलतान में अमल कर लिया और अपना नाम .कुतुबुद्दीन रख कर बादशाही करनी शुरू की।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ शेख़यूसुफ़ मुलतानी | ... | ८४७ | १५०० |
| २ .कुतुबुद्दीन लंगा | ... | ८५८ | १५११ |
| ३ शाह हुसेन लंगा .कुतुबुद्दीन का बेटा | ... | ८७४ | १५२६ |
| ४ शाह फ़ीरोज़ लंगा हुसेनशाह का बेटा | | | |

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



५ शाह महमूद लंगा फ़ीरोज़शाह का बेटा ... ९०८ १५५१
६ शाह हुसेन लंगा शाहमहमूद का बेटा ... ९३१ १५८१

इससे सन् १०३२ ( १५८२ ) में सिंध के बादशाह मिरज़ा शाहहुसेन अरग़ूं ने मुलतान फ़तह कर लिया मगर लूटमार से ऊजड़ करके छोड़ दिया। तब लंगर ख़ाँ नामक एक लंगा ने उसको फिर आबाद किया। उससे हुमायूँ बादशाह के बेटे मिरज़ा कामरां ने ले लिया।

## कश्मीर के बादशाह

कश्मीर में हिन्दू राजाओं का राज हज़ारों वर्ष तक रहा है जिसका हाल राजतरङ्गिणी नामक संस्कृत ग्रंथ में लिखा है। सबसे पिछला हिन्दू राजा सियादेव था। उसके पास शाहमिरज़ा नामक एक मुसलमान फ़क़ीर, जो अपनी पीढ़ियाँ अर्जुन पांडव से मिलाता था, सन् ७१५ (सं० १३७२) में आकर नौकर हुआ। जब सियादेव मरा तब उसके बेटे राजा रंजन ने शाहमिरज़ा को अपना वज़ीर बनाया और अपने घर का काम तथा अपने बेटे चंद्र को भी उसी के हवाले कर दिया। राजा रंजन के मरने पर ऊदन राजा, जो उसका रिश्तेदार था, क़ंधार से आकर गद्दी पर बैठ गया। उसने भी शाह मिरज़ा को ही मुख़्तार बनाये रक्खा और उसके दो बेटे जमशेद और अलीशेर को भी बड़े बड़े काम सौंपे। इन दोनों के सिवा सराशामक और हिंदालन ये दो बेटे और भी शाहमिरज़ा के थे। जब इन सबका बहुत ज़ोर बढ़गया तब राजा ऊदन ने वहम करके इनको अपने घर में आने से रोक दिया। मगर ये तो सब मुल्क में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



फैले हुए थे इससे इनका ज़ोर कुछ नहीं घटा। बल्कि राजा के नौकरों को मिलाकर यह और भी प्रबल हो गये और राजा कमज़ोर होता होता सन् ७४७ ( सं० १४०३ ) में मर गया। उसकी रानी कूटादेवी उसकी जगह बैठ कर शाहमिरज़ा से कहने लगी कि रंजनदेव के बेटे चंद्रदेव को गद्दी पर बैठा कर काम किया कर, मगर शाहमिरज़ा ने नहीं माना। तब रानी उससे लड़ने को गई और पकड़ी जाकर उसको मुसलमान होना और उसके घर में रहना पड़ा। शाहमिरज़ा दूसरे दिन ही अपना नाम सुलतान शमसुद्दीन रख कर कश्मीर का राज करने लगा।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ शमसुद्दीन ३ वर्ष | ... | ७४७ | १४०३ |
| २ जमशेद शमसुद्दीन का बेटा १ वर्ष २ महीने | ... | ७५० | १४०६ |
| ३ अला उद्दीन अलीशेर शमसुद्दीन का बड़ा भाई १३ वर्ष | ... | ७५१ | १४०७ |
| ४ शहाबुद्दीन सराशामक अलाउद्दीन का छोटा भाई २० वर्ष | ... | ७६४ | १४१९ |
| ५ कुतुबुद्दीन हिंदाल सराशामक का छोटा भाई | ... | ७८४ | १४३९ |
| ६ सुलतान सिकंदर कुतुबुद्दीन का बेटा | ... | ७९६ | १४५० |
| ७ अलीशाह सिकंदर का बेटा | ... | ८१९ | १४७३ |
| ८ जैनुलआबदीन अलीशाह का बेटा | ... | ८२६ | १४८० |
| ९ शाहहैदर जैनुल आबदीन का बेटा १ वर्ष २ महीने | ... | ८७७ | १५२९ |
| १० शाह हसन शाहहैदर का बेटा | ... | ८७८ | १५३० |
| ११ मोहम्मदशाह शाहहसन का बेटा | | | |

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



| | | | |
|---|---|---|---|
| १२ फ़तहशाह आदम ख़ाँ का बेटा मोहम्मदशाह को पकड़कर ९ वर्ष | | ८९४ | १५४६ |
| १३ फिर मोहम्मदशाह फ़तह शाह को भगा कर ९ महीने | ... | ९०३ | १५५४ |
| १४ फिर फ़तह शाह मोहम्मद शाह को भगा कर १ वर्ष | ... | ९०४ | १५५५ |
| १५ फिर मोहम्मदशाह फ़तह शाह को भगा कर १२ वर्ष | ... | ९०५ | १५५६ |
| १६ इब्राहीमशाह मोहम्मद शाह का बेटा | ... | ९१७ | १५६८ |
| बाप को कैद करके ८ महीने | ... | ९१७ | १५६८ |
| १७ ना.जुक शाह इब्राहीम शाह का बेटा | | | |
| १८ फिर मोहम्मदशाह चौथी दफ़े ना.जुक शाह को वली अहद बना कर | | | |
| १९ शमसुद्दीन मोहम्मद शाह का बेटा | | | |
| २० फिर ना.जुक शाह ६ महीने | | | |
| २१ मिरज़ा हैदर तुर्क ना.जुक शाह को हरा कर १० वर्ष | | | |
| २२ फिर ना.जुक शाह तीसरी दफ़े मिरज़ा हैदर के मारे जाने पर २ महीने | | | |
| २३ इब्राहीम शाह ना.जुक शाह का बेटा ५ महीने | | | |
| २४ इसमाइल शाह इब्राहीम शाह का भतीजा २ वर्ष | ... | ९६३ | १६१२ |
| २५ हबीबशाह ५ वर्ष | | | |
| २६ ग़ाज़ी शाह चक़ हबीब शाह का नौकर ४ वर्ष | | ९६८ | १६१७ |

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



| | | | |
|---|---|---|---|
| २७ हुसेनशाह ग़ाज़ी शाह का भाई | ... | ९७२ | १६२१ |
| २८ अली शाह हुसेन शाह का भाई | | | |
| २९ यूसुफ़ शाह अली शाह का भतीजा | ... | ९८५ | १६३४ |
| ३० याक़ूबशाह यूसुफ़ शाह का बेटा | | | |

सन् ९९५ (१६४३-४४) में अकबर बादशाह की फ़ौज ने कश्मीर का मुल्क याक़ूबशाह से फ़तह कर लिया जो कभी किसी दिल्ली के बादशाह के हाथ नहीं आया था।

## बङ्गाल के बादशाह

जब शहाबुद्दीन ग़ोरी ने दिल्ली फ़तह की थी तब बिहार से आगे नदिया में लखमणसेन राजा का बेटा लखमणा ८० वर्ष से राज करता था। उस पर शहाबुद्दीन के नौकर मलिक बख़तियार ख़िलजी ने जो कंपिलापटियाली का जागीरदार था, बिहार की तरफ़ से चढ़ाई की। लखमणे से ब्राह्मणों ने कह दिया था कि इस देश में मुसलमानों का राज हो जावेगा; इसलिए बख़तियार ख़िलजी की ख़बर सुनतेही राजा राजधानी को छोड़ कर भाग गया और बख़तियार ख़िलजी का लड़े भिड़े बग़ैरही नदिया में अमल हो गया। फिर उसने अपनी अमलदारी बंगाले से कामरूप तक बढ़ाली और सन् ६०२ (१२६२) में मरगया। उसके पीछे सुलतान तुग़लक़ के वक़्त तक दिल्ली के बादशाहों के हाकिम बंगाले में हुकूमत करते रहे। फिर सन् ७३९ (सं० १३९५) में बंगाले के हाकिम क़दरख़ाँ के मरने पर उसका नौकर मलिक फ़ख़रुद्दीन बादशाह बन बैठा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



तबसे दिल्ली के बादशाहों का अमल बंगाले से उठगया और अकबर बादशाह के समय तक वहाँ के बादशाह ख़ुदमुख़्तार रहते रहे।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ मलिक फ़ख़रुद्दीन | ... | ७३९ | १३९५ |
| २ अलाउद्दीन फ़ख़रुद्दीन को मार कर | ... | ७४१ | १३९७ |
| ३ शमसुद्दीन भंगरा अलाउद्दीन को मार कर | ... | ७४२ | १३९८ |
| ४ शाह सिकंदर शमसुद्दीन का बेटा | ... | ७५८ | १४१३ |
| ५ ग़यासुद्दीन सिकंदर शाह का बेटा | ... | ७६८ | १४२३ |
| ६ सुलतानुल सलातीन शाह | ... | ७७५ | १४३० |
| ७ शमसुद्दीन दूसरा सुलतानुल सलातीन का बेटा | | ७८५ | १४४० |
| ८ राजा कंस हिन्दू | ... | ७८७ | १४४२ |
| ९ जनमल जलालुद्दीन कस का बेटा मुसलमान था | | ७९४ | १४४८ |
| १० सुलतान अहमद जलालुद्दीन का बेटा | ... | ८०२ | १४५६ |
| ११ नासिरुद्दीन ग़ुलाम ७ दिन | ... | ८३० | १४८३ |
| १२ नासिरुद्दीन भंगरा | ... | ८३० | १४८३ |
| १३ बारबुक शाह | ... | ८६२ | १५१५ |
| १४ यूसुफ़शाह बारबुक शाह का बेटा | ... | ८७९ | १५३१ |
| १५ सिकंदरशाह | ... | ८८७ | १५३९ |
| १६ फ़तहशाह | ... | ८९४ | १५४६ |
| १७ बारबुकशाह दूसरा फ़तह शाह को मार कर | | ८९६ | १५४७ |
| १८ मलिक अदील हबशी फ़ीरोज़ शाह, फ़तहख़ाँ को मार कर | | | |
| १९ महमूदशाह फ़ीरोज़ शाह का बेटा | | ८९९ | १५५५ |

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



| | | | |
|---|---|---|---|
| २० मुज़फ़्फ़र शाह हबशी महमूदशाह को मार कर | ... | ९०७ | १५११ |
| २१ शरीफ़ मक्की अलाउद्दीन मुज़फ़्फ़र शाह को मार कर | ... | ९०३ | १५५४ |
| २२ नसीबशाह अला उद्दीन का बेटा | ... | ९२७ | १५७७ |
| २३ सुलतान महमूद बंगाली | ... | ९४३ | १५९३ |
| २४ शेरशाह सूर महमूद शाह को भगा कर | ... | ९४५ | १५९५ |
| २५ हुमायूँ बादशाह | ... | ९४५ | १६०४ |
| २६ फिर शेरशाह सूर | | | |
| २७ सुलतान बहादुर शेरशाह के बेटे सलीम शाह के हाकिम मोहम्मद ख़ाँ का बेटा बाग़ी हो कर | | | |
| २८ सुलेमान कर रानी | ... | ९६० | १६१० |
| २९ बायज़ीद पठान सुलेमान का बेटा | ... | ९८१ | १६३० |
| ३० दाऊदख़ाँ सुलेमान का बेटा | ... | ९८१ | १६३० |

इससे सन् ९८३ ( सं० १६३२ ) में अकबर बादशाह की फ़ौज ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा छीनकर उनको दिल्ली की सलतनत में मिला लिया।

## जौनपुर के बादशाह

फ़ीरोज़शाह तुग़लक़ के बेटे मुहम्मदशाह ने मलिक सरवर नाम ख़्वाजासरा ( नाज़िर ) को ख़्वाजाजहाँ का ख़िताब देकर वज़ीर बनाया था और उसके बेटे सुलतान महमूद ने मलिक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



उलशर्क़ का ख़िताब दे कर सन् ७७० ( १४२५ ) में जौनपुर बिहार और तिरहुत की हाकिमी पर भेजा। वह वहाँ ज़ोर पकड़ कर बादशाह बन बैठा। कई पीढ़ी तक यह बादशाही उसके घराने में रही।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ सुलतान उलशर्क़ ख़्वाजाजहाँ | ... | ७७० | १४२५ |
| २ मुबारक़शाह उसका गोद लिया हुआ | ... | ८०२ | १४५६ |
| ३ शाह इब्राहीम मुबारक़शाह का भाई | ... | ८०४ | १४५८ |
| ४ सुलतान महमूद इब्राहीम का बेटा | ... | ८४२ | १४९५ |
| ५ मुहम्मदशाह महमूद का बेटा | ... | ८६२ | १५१४ |
| ६ हुसेनशाह महमूदशाह का बेटा | ... | ८६२ | १५१५ |

हुसेनशाह से सन् ८८१ (सं० १५३३) में दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोदी ने जौनपुर छीन लिया और फिर यह इलाक़ा दिल्ली के नीचे आगया।

For Private and Personal Use Only

# सिक्खों की दसों बादशाही

| नं० | बादशाही नाम | गुरु साहिब | जन्मतिथि | निर्वाणतिथि |
|---|---|---|---|---|
| १ | पहली | गुरु नानक साहिब | कार्तिक सुदि १५ संवत् १५२६ | आसोज वदि १० संवत् १५९६ |
| २ | दूसरी | गुरु अंगद साहिब | वैशाख सुदि ११ संवत् १५६१ | चैत्र सुदि ४ संवत् १६०९ |
| ३ | तीसरी | गुरु अमरदास साहिब | वैसाख सुदी १४ संवत् १५३६ | भादों सुदी १५ संवत् १६३१ |
| ४ | चौथी | गुरु रामदास साहिब | कातिक सुदी २ संवत् १५५७ | भादों सुदी ३ संवत् १६३८ |
| ५ | पाँचवीं | गुरु अर्जुन साहिब | वैसाख वदी ७ संवत् १६१० | जेठ सुदी ४ संवत् १६६३ |
| ६ | छठी | गुरु हरगोबिंद साहिब | असाढ़ सुदी संवत् १६५२ | चैत्र सुदी ५ संवत् १६७६ |
| ७ | सातवीं | गुरु हरराय साहिब | माह सुदी २ संवत् १६८६ | कातिक सुदी ९ संवत् १७१५ |
| ८ | आठवीं | गुरु हरकिसन सहाय साहिब | सावन वदि १० संवत् १७१३ | चैत्र सुदी १४ संवत् १७२१ |
| ९ | नवीं | गुरु तेगबहादुर साहिब | मगसर सुदि २ संवत् १६७८ | मगसर सुदी ५ संवत् १७३७ |
| १० | दसवीं | गुरु गोबिंदसिंह साहिब | पौस सुदी ७ संवत् १७२२ | कातिक सुदी ५ संवत् १७६५ |

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra
www.kobatirth.org
Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

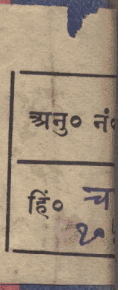


For Private and Personal Use Only